विजेता जागो- जनवरी 2025

1. **प्रार्थना करें** - "जो तुम्हें स्राप दें, उनको आशीष दो; जो तुम्हारा अपमान करें, उनके लिये प्रार्थना करो।" (लूका 6:28)। अपनी ताकत से ऐसा करना असंभव है. परन्तु यीशु जो हमारे भीतर है हमें शांति के लोगों में बदल सकते हैं।

2. **मेरा**- "यहोवा मेरा चरवाहा है" (भजन 23:1अ)। "मेरा" शब्द से सारा फर्क पड़ता है। यही कारण है कि परमेश्वर पर मेरा विश्वास बढ़ता है। इस तरह वह मेरे जीवन को अच्छे मार्ग पर ले जा सकता है और मेरी देखभाल कर सकता है। यही कारण है कि मैं ख़ुशी से उनका अनुसरण करता हूँ।

3. **अच्छे कार्य**- "क्योंकि हम परमेश्वर के बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में भले काम करने के लिये सृजे गए हैं, जिन्हें परमेश्वर ने हमारे करने के लिये पहिले से तैयार किया है" (इफि 2:10)। परमेश्वर हमें प्रतिदिन उन परिस्थितियों में ले जाता है जो उसने हमारे लिए तैयार की हैं। आइए सावधान रहें और वह अच्छा काम करें जो वहां हमारा इंतजार कर रहा है।

4. **पैसा**- "'क्योंकि रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए बहुतों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दु:खों से छलनी बना लिया है।" (1तीमु. 6:10)। हम केवल उन संपत्तियों के प्रशासक हैं जो परमेश्वर ने हमें सौंपी हैं। इसलिए पुरुषों, अपनी प्राथमिकताएँ देखो!

5. **विवाह**-"वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो, और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएँ रुक न जाएँ।" (1पत 3:7)). हे पतियों, अपनी परमेश्वर प्रदत्त भूमिका को स्वीकार करें और अपने पुरोहिती कर्तव्य को पूरा करके अपने परिवार को आशीष दें।

6. **उपहार**– उपहार पाकर अच्छा लगता है। उपहार मिलने पर कुछ लोगों की प्रतिक्रिया अलग-अलग होती है। कुछ लोग तो जो पेशकश की जाती है उसे भी अस्वीकार कर देते हैं। यूहन्ना 3:16 कहता है कि परमेश्वर ने

अपने प्रेम में, अपने एकलौते पुत्र को, जो सबसे बड़ा और सबसे अच्छा उपहार है दे दिया, ताकि उसके द्वारा जगत का उद्धार हो सके। यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करें और उसके साथ अनन्त जीवन का आनंद लें!

7. **जीवन के लिए**–आज की दुनिया की संस्कृति ने विवाह के बारे में कई विचारों का प्रचार किया है, वैवाहिक संबंधों को सापेक्ष और तुच्छ बनाया है। बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर दो लोगों को विवाह में जोड़ता है और विवाह जीवन भर के लिए एक स्थायी रिश्ता है (1 कुरिं 7:39)। हे मनुष्य, परमेश्वर की मदद से आपका विवाह सच्ची साझेदारी की खुशी को प्रतिबिंबित कर सकता है।

8. **शिष्यत्व**– अपने शिष्यों के साथ अपनी अंतिम मुलाकात में, यीशु ने उन्हें इस टिप्पणी के साथ शिष्य बनाने का आदेश दिया: "उन्हें मेरी हर आज्ञा का पालन करना सिखाओ" (मत्ती 28.20)। एक ऐसे पिता बनें जो अपने अनुकरणीय जीवन के माध्यम से अपने बच्चों को प्रभु का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

9. **उद्देश्य**– "उसने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच में से उबारा, और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया है।" (भजन 40.2)। यीशु के बिना जीवन उलझा, अस्थिर और मिट्टी के गड्ढे के समान गंदा है। इसलिए, यीशु पर भरोसा रखें! वह आपको जीवन, आशा और एक स्पष्ट उद्देश्य देगा। उसके साथ, आप सुरक्षित और मजबूती से आगे बढ़ते हैं, जैसे चट्टान पर चल रहे हों!

10. **बुद्धि**– सुरक्षित रूप से निवेश करना, कठिन समय के लिए बचत करना और बुद्धिमानी से खर्च करना स्वस्थ वित्तीय जीवन के लिए बाइबिल के सिद्धांत हैं। "बुद्धिमान के घर में सदैव बहुमूल्य धन और तेल रहता है, परन्तु मूर्ख उसे नष्ट कर देता है" (नीतिवचन 21:20)। यह न तो बहुत, न ही थोड़ा, बल्कि वस्तुओं और मूल्यों का बुद्धिमानीपूर्ण उपयोग है जो सच्ची बुद्धिमत्ता को प्रकट करता है!

11. **योजनाएँ**– नए साल की शुरुआत उद्देश्यों की समीक्षा करने, योजनाएं तैयार करने और यह निर्धारित करने की संभावना लाती है कि आप आने वाले महीनों में क्या हासिल करना चाहते हैं। याद रखें कि परमेश्वर की योजना और विचार हमेशा हमारी तुलना में ऊंचे होते हैं। “मनुष्य के मन में बहुत सी कल्पनाएँ होती हैं, परन्तु जो युक्ति यहोवा करता है, वही स्थिर रहती है।" (नीतिवचन 19:21)।

12. **न्यायसंगत**–"प्रिय परमेश्वर, जीवन बहुत अनुचित लगता है। जहां भी मैं मुड़ता हूं मुझे अन्याय दिखाई देता है। फिर मैं आपकी ओर मुड़ता हूं और क्रूस की ओर देखता हूं। वहाँ आप धर्मी ने मेरे लिये अन्याय सहा। आप हमारे न्यायी बने। मैं मसीह के द्वारा धर्मी ठहराया गया हूँ। मैं अब मसीह में परमेश्वर की धार्मिकता हूं। हालेलुयाह!" (2 कुरिन्थियों 5:21).

13. **अनन्त पिता** – "सर्वशक्तिमान परमेश्वर, यह पुरानी दुनिया और इसमें मौजूद हर चीज़ बिखर रही है। कुछ भी टिकने वाला नहीं लगता. यह इतना निराशाजनक है कि मुझे कभी-कभी ऐसा लगता है मानो हार सा गया हूँ। और फिर मैं आपकी ओर देखता हूं. आप शाश्वत परमेश्वर हैं. मसीह के एक अच्छे सैनिक के रूप में मुझे कठोरता सहने में सक्षम बनाने के लिए धन्यवाद!" (यशा 40:28).

14. **सर्वज्ञ**– "प्रिय परमेश्वर, मुझे कभी भी यह पता नहीं चलता कि मुझे क्या जानना चाहिए जिसे जानने की जरूरत है. हे परमेश्वर, केवल आप ही सर्वज्ञ हैं। इसलिए, मैं चीजों का पता लगाने की कोशिश करना छोड़ देता हूं। मैं मसीह की ओर मुड़ता हूं जो मेरा ज्ञान, मेरी बुद्धि और मेरी समझ है। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि मुझे वह बताएं जो मुझे जानने की आवश्यकता है (प्रेरि 15:18)।

15. **खजाना निधि** –"धन्यवाद, प्रभु, आपकी वास करने वाली उपस्थिति के अद्भुत खजाने के लिए! सारा ज्ञान और बुद्धिमत्ता आप में समाहित है। मैं आपको अपने ज्ञान और बुद्धिमत्ता के स्रोत के रूप में स्वीकार करता हूं। इसलिए, मुझे आप पर भरोसा है कि मुझे जो जानने की जरूरत है, जब मुझे उसे जानने की जरूरत होगी वह आप प्रगट करेंगे। (कुलि 2:2.3)।

16. **परमेश्वर भला है**–"प्रभु यीशु, अच्छा काम करके हमें यह दिखाने के लिए धन्यवाद कि परमेश्वर भला है। विश्वास के माध्यम से, आपने मुझे नया जीवन दिया है, अपना जीवन। धन्यवाद! मैंने आपकी अच्छाइयों को स्वयं अनुभव किया है। अब मुझे दूसरों का भला करने को प्रेरित करो, जैसा आपने मेरे साथ किया है" (भजन 119:68)।

17. **हठ** –"जो मनुष्य बहुत डाँटने पर भी हठीला रहता है, वह बिना उपचार के अचानक नष्ट हो जाएगा" (नीतिवचन 29:1)। मनुष्य अपने जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य का विरोध करने से सावधान रहें। वह आपको पश्चाताप की ओर ले जाना चाहता है। जिद्दी मत बनो, बल्कि परमेश्वर की आज्ञाकारिता में समर्पित हो जाओ। वह नम्र लोगों को अनुग्रह देता है।

18. **गुप्त खजाना**–"परमेश्वर का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है... एक मनुष्य को वह मिल गया... उसने आनन्द में जाकर अपना सब कुछ बेच डाला, और उस खेत को मोल ले लिया" (मत्ती 13:44)। यदि आपने यीशु को पा लिया है, तो आपको सबसे बड़ा खजाना मिल गया है। वह आपकी बड़ी से बड़ी इच्छाएँ भी पूरी कर सकता है। दाम चुकाओ! केवल उसके और उसके राज्य के लिए जियो!

19. **कठोरता**–" यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो अपना मन कठोर न करना" (इब्रानियों 3:15)। स्वतंत्र इच्छा मानव जाति के लिए परमेश्वर का उपहार है। हम अपनी पसंद खुद बना सकते हैं! कोई भी हमारे हृदयों को सुनने से नहीं रोक सकता, केवल पाप और हम स्वयं। इसलिए, यदि आप परमेश्वर की पुकार सुनते हैं तो सावधान रहें और नरम हो जाएं। वह आपको आशीष देना और आपका नेतृत्व करना चाहता है।

20. **सौम्य उत्तर** –“कोमल उत्तर से क्रोध शांत होता है, परन्तु कठोर शब्द से क्रोध भड़क उठता है” (नीतिवचन 15:1)। तनाव, हताशा और आत्म-नियंत्रण की कमी आसानी से टकराव और कठोर शब्दों का कारण बनती है। अपने आप को जानें और अपने मन और भावनाओं को प्रशिक्षित करें क्योंकि आप अपनी इच्छा को मसीह की आज्ञाकारिता में प्रस्तुत करते हैं, जो दिल से दीन और नम्र है।

21. **गर्व** –“इसी प्रकार हे नवयुवको, तुम भी प्राचीनों के अधीन रहो, वरन् तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिये दीनता से कमर बाँधे रहो, क्योंकि “परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।” (1पत 5:5.6)। परमेश्वर के मानक के अनुरूप जीवन जीने के लिए दृढ़ रहें, भले ही वह संस्कृति के विपरीत हो। अंत में जो मायने रखता है वह यह कि प्रभु पुरस्कार देता है।

22. **अलगाव** –“जो अपने आप को अलग कर लेता है, वह अपनी ही अभिलाषा चाहता है; वह सब खरी बुद्धि से झगड़ता है” (नीतिवचन 18:1)। यदि आप दूसरों से निराश हो गए हैं, तो आप स्वयं को अलग-थलग कर लेने के जोखिम में हैं। परमेश्वर को इसे बदलने की अनुमति दें। उसने हमें अपने और दूसरों के साथ संबंधों के लिए बनाया है। क्षमा करने और प्रभु तथा अपने साथी से प्रेम करने के लिए तैयार रहें।

23. **अच्छाई**–"अच्छा आदमी अपने दिल के खज़ाने से जो अच्छा है उसे निकालता है" (लूका 6:45)। हमें फिर से जन्म लेने और उस नए हृदय को प्राप्त करने की आवश्यकता है जिसके बारे में बाइबल बात करती है।

पुरुषों, फर्क लाओ! यीशु मसीह को अपना हृदय बदलने और उसमें विश्वास के माध्यम से जीना शुरू करने की अनुमति दें। तब आप अपनी दुनिया को अच्छाई से आशीष देंगे।

24. **स्व-इच्छा** –"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो उसे अपने आप का इन्कार करना होगा और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे हो लेना होगा" (लूका 9:23)। शिष्यत्व यीशु मसीह के प्रति इच्छा का दैनिक समर्पण है। क्रूस हमें याद दिलाता है कि हमारा पुराना स्वभाव मसीह के साथ मर गया। वह अब हमें उसका अनुसरण करने और परमेश्वर की संतान के रूप में जीने में सक्षम बनाता है।

25. **विश्राम** –“हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ : और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है।” (मत्ती 11:28-30)। प्रभु के प्रस्ताव के लिए "हाँ" कहें, उससे सीखें और उसके विश्राम का अनुभव करें।

26. **मुनाफ़ा** –"यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?" (मरकुस 8:36)? हम पुरुष आसानी से सफलता को अल्पकालिक लाभ से जोड़ देते हैं। लेकिन बुद्धिमान लोग दीर्घकालिक सोचते हैं! पृथ्वी ग्रह पर हमारा समय सीमित है। इस दुनिया में हम जो हासिल कर सकते हैं वह अल्पकालिक है। प्रभु हमें अपनी प्राथमिकताओं पर पुनर्विचार करने और अनंत लाभ के लिए निवेश करने के लिए कहते हैं।

27. **संख्या में काम होना**–"क्योंकि सकेत है वह फाटक और कठिन है वह मार्ग जो जीवन को पहुँचाता है; और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मत्ती 7:14)। परमेश्वर संसार से प्यार करते हैं, भले ही बहुत कम लोग उसे वापस प्यार करते हैं। वह सभी को यीशु के पास आने के लिए आमंत्रित करते हैं, लेकिन केवल एक छोटी संख्या ही उद्धारकर्ता के प्रति विश्वास में समर्पण करती है। भीड़ कभी भी सही नहीं होगी. परमेश्वर के साथ संख्या में कम होने के लिए तैयार रहें।

28. **विद्रोह** –"इसलिये तू और तेरी सारी मण्डली यहोवा के विरूद्ध इकट्ठी हुई है" (गिन 16:11)? कोरह ने विद्रोह कर दिया क्योंकि वह परमेश्वर की सेवा को लोकतंत्र के समान मानता था। वह अपनी बात कहना चाहता था। यीशु मसीह को याद रखें, चर्च का मुखिया अपनी आत्मा से चर्च का नेतृत्व करना चाहता है, न कि शक्ति या ज़ोर के माध्यम से, न ही बहुमत के शासन के माध्यम से।

29. **गरिमा**–"वह बल और प्रताप का पहिरावा पहिने रहती है, और आनेवाले काल पर हँसती है।" (नीतिवचन 31:25)। एक महिला जो अपने पति से सच्चा प्यार करती है और अपनी ईश्वर प्रदत्त सभी क्षमताओं को विकसित करने में सक्षम है, वह अपने परिवार के लिए एक अद्भुत आशीष है। यह परमेश्वर का इरादा था जब उसने हव्वा को आदम के लिए उपयुक्त सहायक के रूप में बनाया। पुरुषों, अपनी पत्नी से प्यार करना सीखो।

30. **त्यागमय प्रेम** –"पति अपनी पत्नियों से प्रेम करें, जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और अपने आप को उसके लिए दे दिया" (इफिसियों 5:25)। पुरुषों, बेहतर होगा कि हम ईमानदार रहें और बाइबिल के इस आदेश को पूरा करने में अपनी असमर्थता स्वीकार करें। इसलिए, आइए मसीह को हमारे माध्यम से अपना जीवन जीने की अनुमति दें। उनका त्यागपूर्ण प्रेम हमारे विवाहों को भी स्वर्ग में बदल देगा।

31. **छुटकारा निकट है** –"जब ये बातें होने लगें, तो सीधे होकर अपने सिर ऊपर उठाना; क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट होगा।" (लूका 21:28)। जैसे-जैसे वैश्विक तनाव बढ़ रहा है, और प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ रही हैं, भय न खाना क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट है। प्रार्थना करें कि जब मनुष्य का पुत्र वापस आये तो उसके सामने खड़े होने के लिए तैयार रहें।